Shimla Eco-Vibes; Vol. 1, No. 1, October 2024, pp 57

'महज़ भौंकते नहीं'...

©अशोक चौहान, Retired Banker, passionate poetry writer, who conveys concerns of environment and ecology

चलना बच बच के,
ज़रा रहना सावधान;
उफ़ क्या हो गई है,
इस बस्ती की पहचान;
चाहे सड़क या दुकान,
क्या गली क्या दालान,
सब तरफ़ श्वान ही श्वान,
सब तरफ़ श्वान ही श्वान!

भूरे सफ़ेद काले,
बच पाये जो इनसे,
वो हैं क़िस्मत वाले;
ग़ुर्राते हैं डराते हैं,
दौड़ाते हैं चौंकाते हैं,
महज़ भौंकते नहीं
कुत्ते ये काटते भी हैं;
रातों की नींद
उचाटते भी हैं!
न जाने कब किस पे हो
इनके दाँतों का वार,
पैदल चलने वालो
ज़रा रहना होशियार;
जाने किसके जबड़ों में हो
रेबीज़ वाली लार;
टीका लगवाना मजबूरी
रहना होगा तैयार!

इधर कुत्ता उधर कार,
पैदल चलना है दुश्वार;
कुत्ते से बचे अगर,
तो तेज़ वाहनों का है डर!

भाई चौकन्ना होकर चल,
जगह जगह कुत्तों का मल;
पैर से न देना कहीं कुचल,
क्या शुद्ध रहेगा पेयजल ?
ये आपको करना है तय,
स्वच्छ परिवेश या
एक खुला श्वान-शौचालय ?

कुत्ते में छिपा भेड़िया
तब जग जाता है,
जब अपने से आवारा का
संग पाता है;
समूह से जुड़ ये और भी
हो जाते ख़ूँख़ार,
बहुत बड़ा ख़तरा है
ऐसे कुत्तों की भरमार !

जगज़ाहिर है कुत्ते की
वफ़ादारी व प्यार,
पर यहाँ बदल गया किरदार,
ये बेचारे नहीं क़सूरवार,
फ़क़त आदमी है ज़िम्मेवार ?

सही उपाय की सख़्त दरकार,
सुरक्षा की है जनता हक़दार !